Biblical Mandate for Evangelism

Session - 1

'एवान्जिलिजम' (Evangelism) शब्द ग्रीक शब्द इएंगलियोन (Eu-angelion) से लिया गया है जिसका हिन्दी अनुवाद परमेश्वर का सुसमाचार है

अन्य शब्द के अनुवाद इस प्रकार है,

पवित्र परमेश्वर का प्रभु यीशु मसीह के शारीरिक रूप में आने का है । तथा उनकी मृत्यु एवं पुर्नजीवित होना एवं पवित्रात्मा का उण्ड़ेला जाना एवं कलीसिया के रूप में स्थापित होना । यही सुसमाचार है ।

इसीलिये कलीसिया पवित्रशास्त्र का एक जीवित रूप है ।

मत्ती 4:19 यीशु ने कहा "मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुमको मनुष्यों के पकडनेवाले बनाऊगा"

सुसमाचार में दो बातें शामिल है

1. जानकारी एवं संकल्प Information and intention
2. नियंत्रण एवं प्रशिक्षण Invitation and Instruction

"सुसमाचार का उद्देश्य है मन परिवर्तन" (J.Packer)

To evangelise is to clearly

Show God's offer of Salvation in Christ उद्धार क वरदान

lead the people, अगुवाई करना

invite them to faith (also to baptize them). बाप्तिस्मा देना

Encourage: to commit their Life in the Spirit as active, responsible Church-member. प्रोत्साहन देना

JIM ELLIOT

He is no fool who loses what he cannot keep to gain what he cannot lose.

वह निर्बुध्दि नही है जो नही पा सकता है, उसके लीये सब कुछ को जाय, जो नही खो सकता है, उसके लीये दुनिया में सब चीज खो दे।

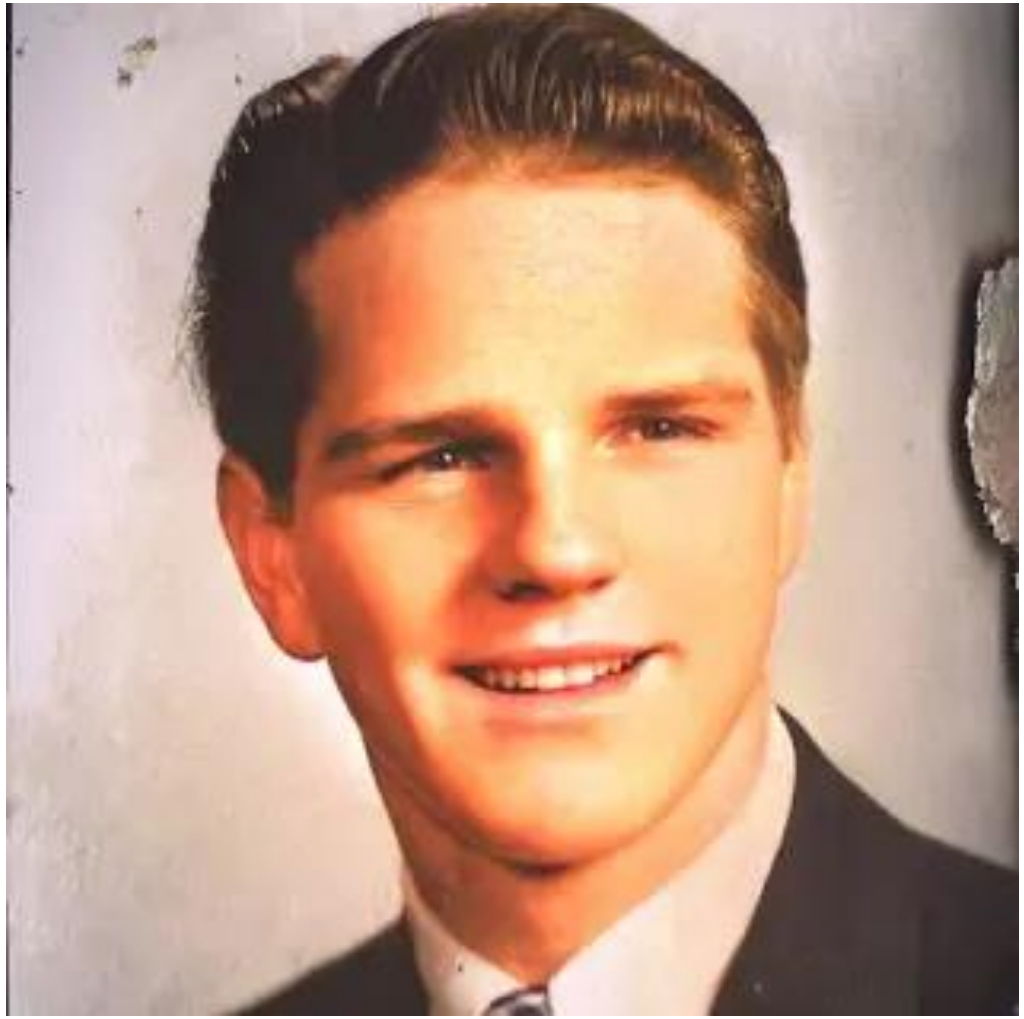

What the Bible says about Sin. पाप के बारे में बईबिल क्या बताता है?

- Every kind of wrong doing is sin (1 Jn. 5:17).

हर प्रकार का गलत काम पाप है (1 यूहन्ना 5:17)।

- Which means doing anything that is not right.

जिसका मतलब है ऐसा कुछ भी करना जो सही नहीं है.

- Not obeying God's law is sin (1 Jn.3:4).

परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करना पाप है (1 यूहन्ना 3:4)।

- Not doing what should be done (sin of omission) (Jam. 4:17)

जो करना चाहिए वह न करना (चूक का पाप) (याकूब 4:17)

- Not believing or accepting the Lord Jesus Christ is sin (Jn. 16:8-9).

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास न करना या उन्हें अस्वीकार पाप है (यूहन्ना 16:8-9)।

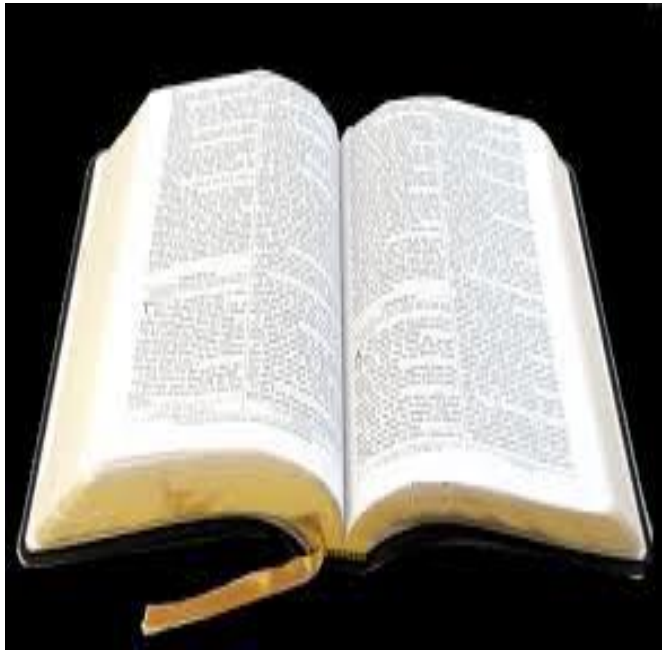

The kinds of sin Bible portrays: बईबिल पाप को कैसे दर्शाता है (Ps.32:1-2)

- **Sin:** Which means missing the mark, anything short of what God expects or wants from us. It is not only the acts of sin but also the thoughts of sin and sinful mind. (Ps. 51:2-4, Gen. 4:7, Ex. 9:27, Num. 6:11, Prov. 8:36, Rom. 3:23).

पाप: जिसका मतलब है कि निशान से दूर, जो कुछ परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है या मनुश्य से चाहता है उसमें कुछ भी कम हो। यह न केवल पाप के कृत्यों से ही नहीं, बल्कि पाप और पाप पूर्ण दिमाग के विचार से भी है।

- **Transgression: Turning against someone or not obeying your superiors, elders. (Ps. 51:2-3, Prov.28:2. I Tim.2:14).**

अपराध: किसी के खिलाफ हो जाना या अपने वरिष्ठों, बड़ों की बात न मानना। (Ps 51: 2-3, Prov.28: 2, 1Tim.2: 14)।

- **Iniquity:** Which means not straight, sinful heart, it may not be the act of sin but the crooked behavior (Gen. 15:16, Ps. 32:2-5).

अनैतिकता: जिसका मतलब सीधे नही है, पाप का दिल है, यह पाप का कार्य नहीं हो सकता है लेकिन कुटिल व्यवहार (उत्पत्ति 15:16, Ps 32: 2-5)।

- **Error:** This means not to know what should have been learned or known (Heb. 9:7).

त्रुटि: इसका मतलब यह है कि नहीं सीखना चाहते है जो ज्ञात होना चाहिए (इब्रा। 9: 7)।

Where was Sin ? पाप कहाँ था?

Sin was in Heaven due to Lucifer

लूसिफ़ेर के कारण पाप स्वर्ग में था।

- When Lucifer sinned against God, God dethroned Lucifer and threw him into the earth because God wanted to purify Heavens (Isa. 14:12-16).

जब लूसिफ़ेर ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, तो परमेश्वर ने लूसिफ़ेर को गद्दी से उतार दिया और उसे पृथ्वी पर फेंक दिया क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग को शुद्ध करना चाहता था।

- Now Satan (Lucifer) is making war against Christians (Eph. 6:11-12).

अब शैतान (लूसिफर) मसीहियों के विरुद्ध युद्ध कर रहा है ।

- Our fight is not against the flesh and blood, but against the principalities and powers of darkness (Eph.6:12)

हमारी लड़ाई मांस और खून के खिलाफ नहीं है, बल्कि अंधेरे की रियासतों और शक्तियों के खिलाफ है।

What the Bible says about Sin:

- Every kind of wrong doing is sin (1 Jn. 5:17). हर प्रकार का गलत काम पाप है (1 यूहन्ना 5:17)।
- Which means doing anything that is not right.

जिसका मतलब है ऐसा कुछ भी करना जो सही नहीं है।

- Not obeying God's law is sin (1 Jn.3:4).

परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करना पाप है

- Not doing what should be done (sin of omission) (Jam. 4:17; Rom.7:15)

जो करना चाहिए वह न करना (चूक का पाप) (याकूब 4:17)

- Not believing or accepting the Lord Jesus Christ is sin (Jn. 16:8-9). प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास न करना या उन्हें स्वीकार न करना पाप है (यूहन्ना 16:8-9)।

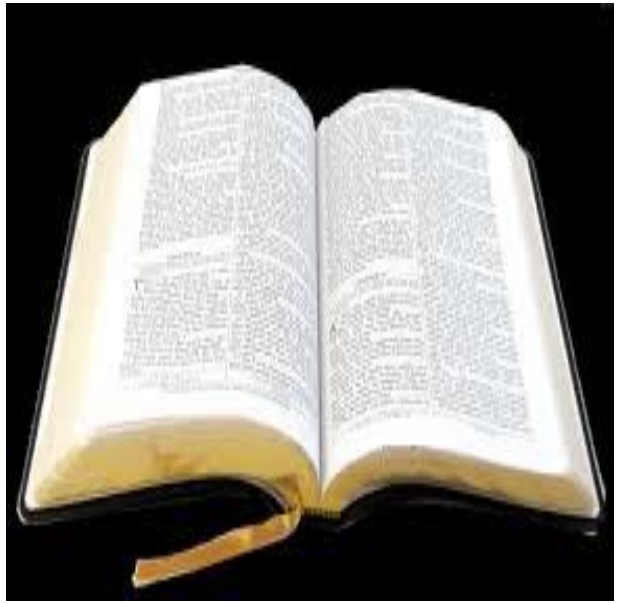

Time-line of Sin पाप की समय सीमा

- Conception of Sin (Gen. 3) leading to Corruption of Sin (Gen. 4 – 5)

पाप की धारणा, पाप के भ्रष्टाचार की ओर आग्रेशित करती हैं।

- Condemnation of Sin (Gen. 3) leading to Continuation of Sin (Gen. 9)

पाप की निंदा, पाप की निरंतरता लगातार करने की ओर आग्रेशित करती है।

- Culmination of Sin (Gen. 10–11) leading to Eternal Separation.

पाप की चरमसीमा, अनंत काल से अलग करती है।

What are the consequences of sin?

- Plants suffer (Gen 3:17,18), weeds grew (Rev. 23:3)

पौधे पीड़ित होते हैं, जंगली घास उगती है|

- Animals and men suffer. Since the flood men and animals have been afraid of each other. (Gen. 9:2).

पशु और मनुष्य कष्ट भोगते हैं। नूह के समय बाढ़ के बाद से आदमी और जानवार एक-दूसरे से डरे हुए हैं।

- But during the time when Christ will return to rule the earth, they will be at peace with each other. (Isa 11:6-9).

परन्तु उस समय जब मसीह पृथ्वी पर शासन करने के लिए लौटेगा, वे एक दूसरे के सात शांति से रहेंगे।

- The day the new heavens and the new earth will appear, all suffering will be gone forever. Things will be perfect again (Rom 8:19-23, Rev. 21:1-5).

जिस दिन नया आकाश और नई पृथ्वी प्रकट होगी, सारी पीड़ा हमेशा के लिए दूर हो जाएगी। चीज़ें फिर से सही हो जाएँगी।

Sin is in all of man - Body, spirit and soul.

- Their minds are in darkness, they are strangers to God. Eph.4:18
- उनके दिमाग अंधेरे में हैं, वे परमेश्वर के लिए अजनबी हैं। (Eph.4: 18)
- His desires to are to please himself. 1Cor 2:14.
- उनकी इच्छा यह है की खुद को खुश करना है। (1 Cor. 2:14)।
- He cannot understand because he does not have the Holy Spirit.
- वह समझ नहीं पाता क्योंकि उसके पास पवित्र आत्मा नहीं है।

- Man’s soul has been hurt by sin. Man’s own heart is not truthful to himself. The thoughts of heart are sinful (Jer.17:9).

मनुष्य की आत्मा पाप से चोटील है। मनुष्य का दिल अपने में सच नहीं है। दिल के विचार पापपूर्ण हैं (Jer.17: 9)

- Man’s sinful mind works against God. (Ps.94:11, Rom1:19-31, 8:7-8, 7:18).

मनुष्य का पापी मन परमेश्वर के खिलाफ काम करती है। (भज.94: 11, रोम 1:19-31, 8:7-8, 7:18)

- Man’s body became weak and will die because of sin (Rom 8:13a).

मनुष्य का शरीर कमजोर हो छुका है और पाप के कारण मृत्यु की ओर जा रहा हैं। (रोम 8:13)

परमेश्वर समस्त कलीसिया को
सारे जगत में संपूर्ण वचन को
फैलाने के लिए बुला रहे है

जब परमेश्वर ने जगत एवं मनुष्य की सृष्टि की उस समय

मनुष्य एवं परमेश्वर से (उत्पत्ति 1.15-18)

मनुष्य एवं मनुष्य से (उत्पत्ति 2:21-24)

मनुष्य को उसके स्वयं से (उत्पत्ति 2:25) एवं

मनुष्य का प्रकृति से उत्पत्ति 1:26 एक संगती/संबंध था ।

परन्तु जब मनुष्य ने पाप किया सब कुछ समाप्त हो गया और सारे संबंध टूट गए यह एक दुखमय समाचार है ।

Seven Deadly Sins

Pride अहंकार

Sloth सुस्ती

Anger क्रोध

Lust कामुकता

Envy ईर्षा

Greed

लोभ, लालच

भुक्खड़पना Gluttony

What sin is like and how it spreads पाप कैसा है और कैसे फैलता है?

- Sin is like cancer. पाप कैंसर की तरह है.
- It makes the person to commit sin and live in sin.

यह व्यक्ति को पाप करने और पाप में जीने के लिए प्रेरित करता है।

- Every time a person does sin and pleases his sinful desires, more sin come into his life which results in more acts of sin.

जब भी कोई व्यक्ति पाप करता है और अपनी पापपूर्ण इच्छाओं को पूरा करता है, तो उसके जीवन में और अधिक पाप आ जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप अधिक पाप कार्य होते हैं।

- It is just like a cancer when started in a person, if it is not taken care of, it spreads and takes over his body.

यह ठीक उसी तरह है जैसे किसी व्यक्ति में कैंसर शुरू होता है और अगर इस पर ध्यान न दिया जाए तो यह फैलकर उसके शरीर पर कब्ज़ा कर लेता है।

- Cancer brings death, in the same way, if sin is not taken care of, it will spread and the person will be eternally condemned and experience eternal death (Rom. 6:23, Jam.1:14-15).

कैंसर मृत्यु लाता है, उसी प्रकार यदि पाप पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह फैल जाएगा और व्यक्ति अनंत काल तक दोषी ठहराया जाएगा और अनंत मृत्यु का अनुभव करेगा (रोम. 6:23, जाम.1:14-15)।

- **So sin is any action, a feeling, or thought that goes against God's standards.**

तो पाप कोई भी कार्य, एक भावना है, या सोचा कि यह विपरीत जाता है परमेश्वर के मानक.

- In the Bible's original languages, the words for **sin** mean "to miss a mark," or a target.

बाइबिल की मूल भाषाओं में, पाप शब्द का अर्थ है "चूकना।" एक निशान," या एक लक्ष्य चूकना।

- The Bible says that "all have sinned and fall short of the glory of God."

बाइबल कहती है कि "सब ने पाप किया और परमेश्वर के महिमा से रहित हुए."

Results of Sin

Before Adam sinned, he was having a good relationship with God. After he sinned, his relationship was lost or alienated in all directions.

आदम पाप करने से पहले, उसका परमेश्वर के साथ अच्छा रिश्ता था। पाप करने के बाद, उसका रिश्ता खो गया या सभी दिशाओं में अलग हो गया।

1) God – Man became spiritually alienated:

परमेश्वर - मनुष्य आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर से अलग हो गया:

2) Human beings - Man became socially alienated: Ex. Hatred ness, wars. Family breakdowns etc.

मनुष्य - मनुष्य सामाजिक रूप से अलग-थलग हो गया: उदाहरण घृणा, युद्ध. पारिवारिक विघटन आदि।

3) Within himself (mind)- Man became psychologically alienated:

Ex. His body and mind got disconnected (Rom 7:15)

अपने भीतर (मन) - मनुष्य मनोवैज्ञानिक रूप से अलग-थलग हो गया: उदाहरण। उसका शरीर और मन अलग हो गए (रोम 7:15)

4) Nature - Man became cosmologically alienated: Mismanaged the world, nature, deforestation, ozone depletion,

प्रकृति - मनुष्य सृष्टि से अलग-थलग हो गया: दुनिया का कुप्रबंधन, प्रकृति, वनों की कटाई, ओजोन की कमी

मनुष्य के चारों दिशा के पाप इस प्रकार है।

सर्वप्रथम मनुष्य ने अपना संबंध परमेश्वर से तोड़ा यह एक आत्मिक विच्छेदन (spiritual alienation) अलगाव, दूरी, हुआ (उत्पत्ति 3:8, रोमियों 1:18:31)!

द्वितीय, मनुष्य ने अपनी धुर्तता, युध्द, अपराध, नफरत एवं टूटे हुए विवाहों के द्वारा समाज से रिश्ता तोड़ा यह समाजिक अलगाव (social alienation) विच्छेद, दूरी (उत्पत्ति 3:12, 4:8) हुआ !

तृतीय, मनुष्य ने अपना संबंध स्वयं से तोड़ा अपने ही मानसिक तनाव निम्नता का विचार आदि के द्वारा, इसे मानसिक अलगाव (psychological alienation) **विच्छेदन** कहते हैं ।
(उत्पत्ति 3: 10, रोमियों 7:10, 15:20 यिर्मयाह 17: 9)

चौथा मनुष्य ने अपना संबंध प्रकृति से तोड़ा जो कि उससे प्रगति या औद्योगिकरण आदि के नाम से प्राकृतिक असंतुलन (cosmological alienation) के लिये जिम्मेदार रहा ।

मनुष्य का हृदय/मानसिक सन्तुलन

Conscious

Sub Conscious

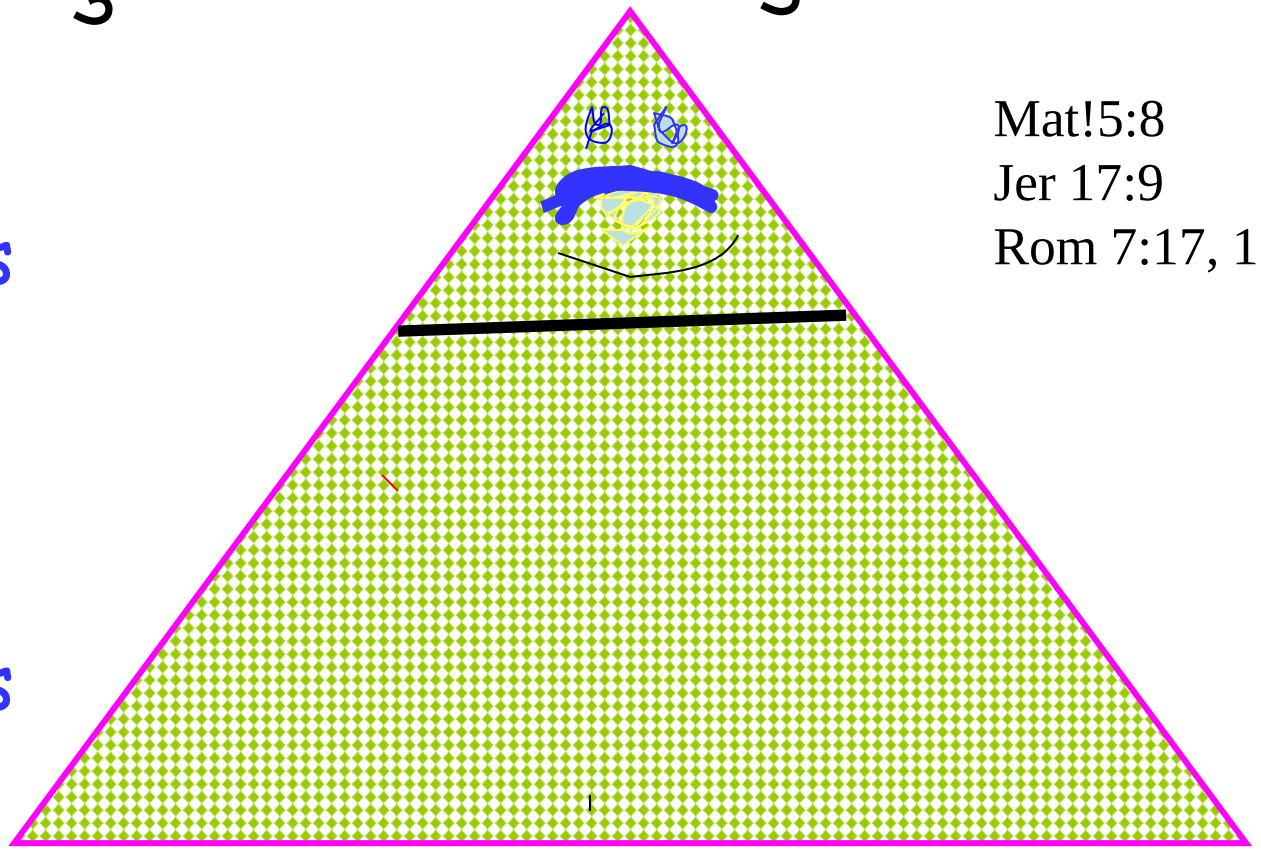

Mat!5:8
Jer 17:9
Rom 7:17, 1:29-32

मानसिक तनाव, अशान्ती, धुख, पुराना अनुभव, धुष्टात्मा के सम्पर्क, भायानक विचार आदी।

The fallen nature Nature of man

मनुष्य की स्थिती (a Broken Mirror)

SPIRITUAL ALIENATION
आत्मीक विछेदन

COSMOLOGICAL

SOCIALOGICAL

PSYCHOLOGICAL ALIENATION
मानसिक विछेदन

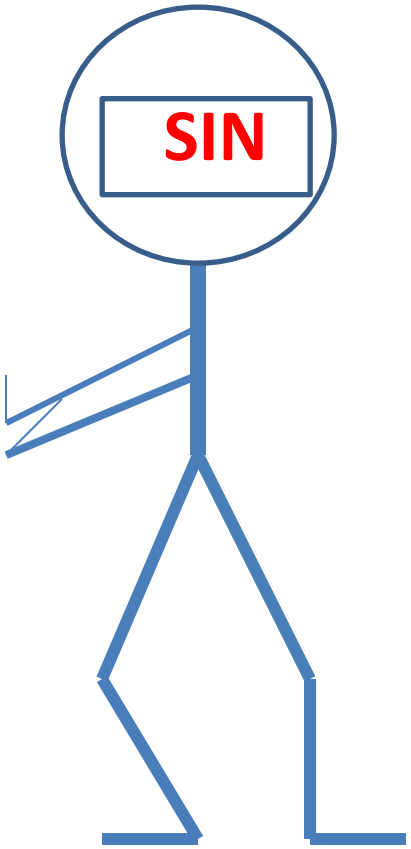

HOLINESS OF GOD (Isa.6:3)
RIGHTEOUSNESS OF GOD (Hab.1:13)
JUSTICE OF GOD (Ps.97:2)

Man is a sinner
by nature (Eph.2:3)
and by actions (Rom.3:23)

Penalty of Sin
Spiritual Death : (Eph.2:1)
Physical Death: (1 Cor.15:22)
Eternal Death: (Rev.20:1-14)

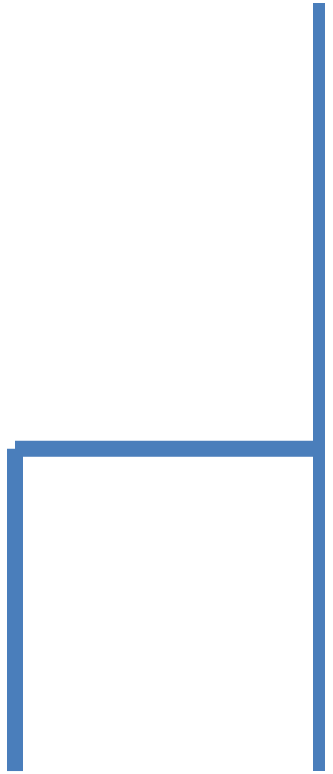

Sinful Man
(Gal.3:22,
Isa.59:2)

BARRIER OF SEPARATION

HOLY GOD
(Rom.2:11-12)

प्रभु यीशु मसीह इस टूटे हुए रिश्तों को अपने क्रूस की मृत्यु के द्वारा सुधारने के लिए आये प्रभु यीशु मसीह ने हमें उद्धार दिया है जो कि चारों तरफ रिश्तों को सुधारता है ।

What is Repentance? पश्चाताप क्या है?

- "Repent" means to change one's mind, thought, purpose, views regarding a matter; it is to have another mind about a thing. Viz. Prodigal son (Lk.15:11ff) and Publican (Lk.18:9-14).

"पश्चाताप" का अर्थ है हमारे मन, विचार, उद्देश्य, दृष्टिकोण को बदलना; यह किसी चीज़ के बारे में दूसरा मन रखना है। Ex. उड़ाऊ पुत्र (Lk.15:11ff) चुंगी लेने वाला (Lk.18:9-14)।

- Repentance is a heart broken for sin and a break from sin also.

पश्चाताप पाप के लिए दिल टूटना है और पाप से मुक्ति भी पाना है।

- Repentance is simply returning to the Lord from our sinful ways. Prophets right from Isaiah to Malachi, speak of return to the Lord, leave your sinful ways.

पश्चाताप का अर्थ केवल अपने पाप से छुटकारे के लीये प्रभु के पास लौटना है। यशायाह से लेकर मलाकी तक के भविष्यवक्ता, प्रभु के पास लौटने, अपने पापी रास्ते छोड़ने की बात करते हैं।

- It is a crisis with a changed experience.

यह एक बदला हुवा अनुभव है।

- Godly repentance brings Salvation. A person is saved or not is known by his acts of repentance.

ईश्वरीय पश्चाताप उद्धार लाता है। कोई व्यक्ति बचाया जाएगा या नहीं, यह उसके पश्चाताप के अनुभव से जाना जाता है।

- Without repentance there is no forgiveness of sins.

पश्चाताप के बिना पापों की क्षमा नहीं होती।

- An unforgiven sinner cannot have salvation or salvation experience.

एक क्षमा न किये गये पापी को उद्धार का अनुभव नहीं मिल सकता है।

Why Repentance is required पश्चाताप क्यों जरूरत है?

- The burden of the heart of God, and His one command to all men everywhere, is that they should repent.

परमेश्वर के हृदय का बोझ, और हर जगह सभी मनुष्यों के लिए उसकी एक ही आज्ञा है, कि उन्हें पश्चाताप करना चाहिए।

- Peter replied, “Repent and be baptized, every one of you, in the name of Jesus Christ for the forgiveness of your sins. (Acts 2:38)

पतरस ने उत्तर दिया, “पश्चाताप करो और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले।

- In the past God overlooked such ignorance, but now he commands all people everywhere to repent. Acts 17:30).

इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी कर के, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है

- John the Baptist began said: “Repent, for the Kingdom of Heaven has come near” (Matt.3:1-2) 1 यहून्ना बपतिस्मा देनेवाला कहा: मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

- When Jesus sent forth the twelve and the seventy messengers to proclaim the good news of the Kingdom of Heaven, He commanded them to preach repentance (Lk.24:47; Mk.6:12).

जब यीशु ने स्वर्ग के राज्य की खुशखबरी सुनाने के लिए बारह और सत्तर दूतों को भेजा, तो उसने उन्हें पश्चाताप का प्रचार करने का आदेश दिया।

- "Repent, then, turn to God, so that your sins may be wiped out" (Acts 3:19) - Peter

फिर मन फिराओ, परमेश्वर की ओर फिरो, कि तुम्हारे पाप मिट जाएं - पतरस

- Without Repentance, there is no forgiveness of sins.

पश्चाताप के बिना पापों की क्षमा नहीं होती।

How do you repent ?

- Repentance is a divine gift. The very Gospel which calls for repentance produces the repentance.

पश्चाताप एक दिव्य उपहार है. वही सुसमाचार जो पश्चाताप का आह्वान करता है, पश्चाताप उत्पन्न करता है।

- The people of Nineveh repented when Jonah spoke of impending God's wrath upon them (Jonah 3:5-10).

जब योना ने नीनवे लोगों पर परमेश्वर का क्रोध आने की बात कही तो नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया।

- I will be sorry for my sin. I will declare mine iniquity (Ps.38:18).

मुझे अपने पाप पर पछतावा होगा. मैं अपने अधर्म की घोषणा करूंगा।

- Let the wicked forsake his way and the unrighteous man his thoughts and let him return unto the Lord (Prov.28:13; Matt.3:8-10).

दुष्ट अपना मार्ग और अधर्मी अपने विचार त्याग दे, और प्रभु के पास लौट आए।

- It is not enough to turn away from sin, but we must turn unto God.

पाप से विमुख होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें ईश्वर की ओर मुड़ना होगा।

Results of Repentance:

1) स्वर्ग में आनंद होगा:

मैं तुमसे कहता हूं कि उसी प्रकार स्वर्ग में एक पश्चाताप करने वाले पापी के लिए उन निन्यानबे धर्मी व्यक्तियों की तुलना में अधिक आनंद मनाया जाएगा जिन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है **(Luke 15:7,10)।**

2) पश्चाताप से व्यक्ति को क्षमा और पापों की क्षमा मिलती है।

ईश्वरीय पश्चाताप के माध्यम से, एक व्यक्ति अपने सभी पिछले पापों के लिए क्षमा और भविष्य के जीवन के लिए क्षमा की आशा प्राप्त करने के योग्य है (Isa.55:7; Acts 3:19)

3) **पश्चाताप करने वाले व्यक्ति को पवित्र आत्मा प्राप्त होती है।**

पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। (Acts 2:38).

मनुष्य की स्थिती (बदला हुआ)

परमेश्वर के साथ मेल मिलाप

जगत से मेल मिलाप

अन्यों के साथ मेल मिलाप

स्वयं के साथ मेल मिलाप

1. परमेश्वर के साथ मेल मिलाप 2कुरू 5:19 कुल 1:19
   क्षमादान इफि 1:17: 1Jn.1:9 रोमि 3:24-26
2. परमेश्वर के सन्मुख न्याय :रोमि 15:10-11
3. अन्यों के साथ मेल मिलाप :इफि 2: 14-16, लूक 10:27
4. स्वयं के साथ मेल मिलाप : नया जन्म यहुन्ना 5: 23
5. नयी सृष्टि 2 कुरू 5: 17
6. जगत से मेल मिलाप : नया आकाद्दाए नयी पृथ्वी जो कि
   प्रभु यीद्दु मसीह ने प्रतिज्ञा की

मनुष्य का हृदय/मन (परिवर्तित)

Jn.10:10

Jn.3:3,5
2 Pet 1:4, Gal 4:6
2 cor 5:17, Jam 5:14-15

Conscious

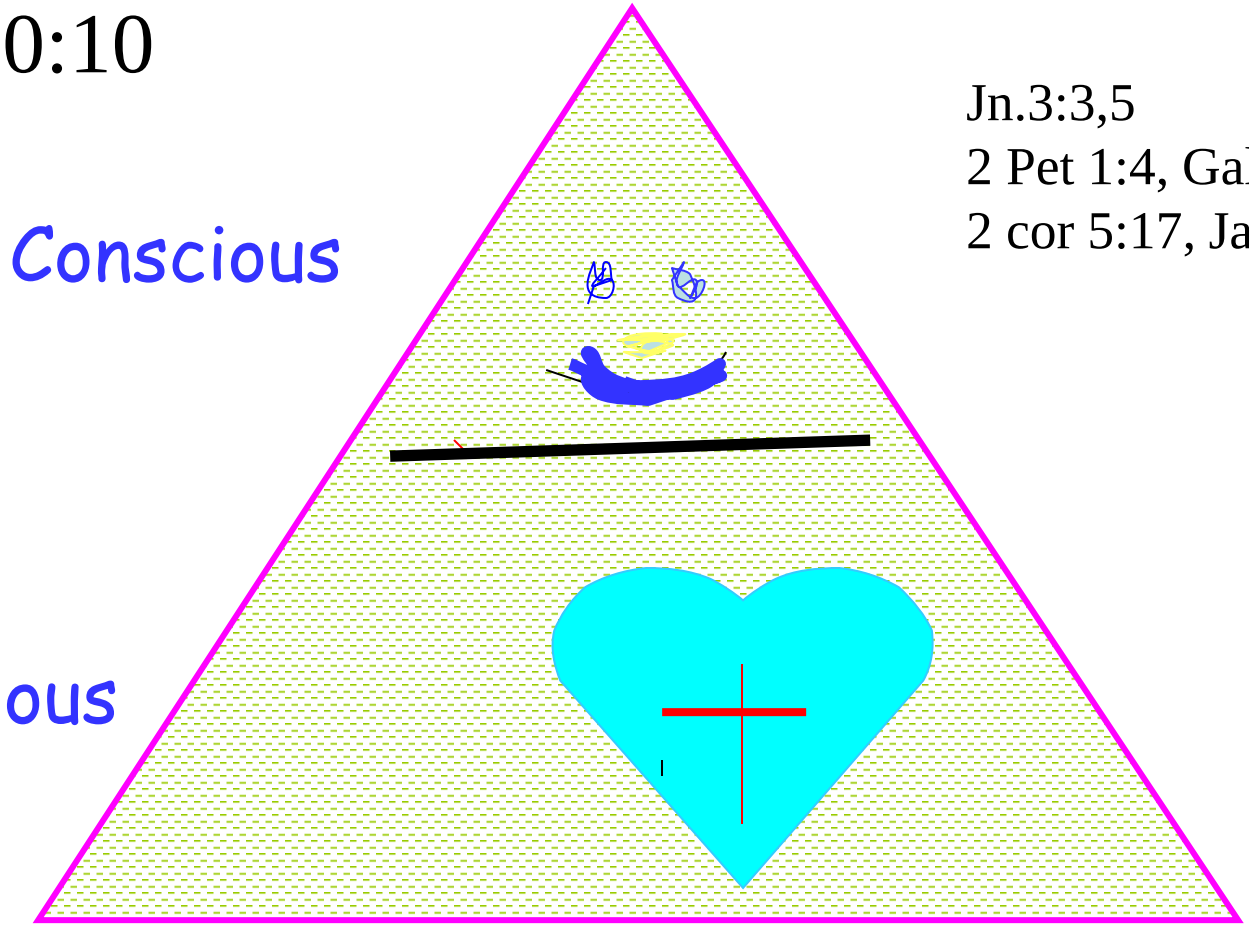

Sub
Conscious

Behold ! All things have become new
देखो सब नये हुवे है।

पवित्र शास्त्र के अनुसार सुसमाचार का अर्थ मसीह यीशु की घोषणा करना अपनी उपस्थिति द्वारा, वचन द्वारा और पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हुए धर्मशास्त्र का उपयोग करके मसीह यीशु के शिष्य बनाना; और कलीसिया के जिम्मेदार सदस्य बनाना। डा. बिल्ली ग्राहम

पवित्रशास्त्र के आधारित कलीसिया

1. सुसमाचारीय – परमेश्वर का वचन नूतन एवं सुधार
2. सार्वभौमिक – वचन संपूर्ण, सार्वभौमिक समस्त मानव जाति एवं सारे जगत के लिए
3. चमत्कारीय –जो पवित्रात्मा के शक्ति पर निर्भर हैं ।

कलीसिया के प्रमुख कार्य:

सुसमाचार के प्रचार इस प्रकार होना है।

- **Culturally relevant.** सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो।
- **Contextualized properly** उचित ढंग से सन्दर्भित किया गया है
- **Comprehend simply (Easily understandable)**
  सरलता से समझें (आसानी से समझने का योग्य)
- **Balanced – highlighting Sin, Salvation, eternal life and the cost of discipleship.**

संतुलित - पाप, उध्दार, अनंत जीवन और शिष्यत्व की कीमत पर प्रकाश डालना।

May the Lord help us to be a good Witness

Thanks for your Patient hearing

For more details, please contact: K. Ravikumar,
Mob.8986873994, Email: katiravikumar@gmail.com
For PPT- www.katibibletitbits.com